देवी–देवताओंकी उपासना : शिव – खण्ड २

भगवान शिवकी उपासनाका अध्यात्मशास्त्र

(आरती एवं शिवचालीसा सहित)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र–स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

जून २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ८७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

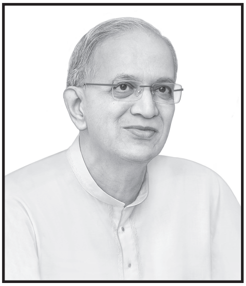

१. ‘ईश्वरप्राप्ति हेतु कला’ के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. ८.७.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२६ और अन्य ८९३ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. उपासना ८

* पूजाके लिए तैयार होना : भस्म लगाना एवं रुद्राक्षधारण ८
* रुद्राक्षकी विशेषताएं, कार्य एवं लाभ १६
* असली एवं नकली रुद्राक्षमें अन्तर १८
* शिवतत्त्व आकर्षित एवं प्रक्षेपित करनेवाली कुछ रंगोलियां ३०
* शृंगदर्शन करनेकी पद्धति, लाभ एवं उचित पद्धतियां ३१
* शिवालयमें पिण्डीके दर्शन करनेकी पद्धति ३७
* पूजाके लिए अरघाके स्रोतके सामने न बैठनेका कारण ३९
* ठण्डे जल एवं दूध से स्नान कराना ३९
* भस्मकी तीन समानान्तर धारियां खींचना ४०
* श्वेत अक्षत, श्वेत पुष्प एवं त्रिदल बेल चढानेका कारण ४०
* शिवपिण्डीपर बेल चढानेकी पद्धतिसे सम्बन्धित अध्यात्मशास्त्र ४१

* पिण्डीपर जलकी निरन्तर धार होनेका कारण ४४

* शिवपूजाकी कुछ विशेषताएं एवं उनका शास्त्रीय आधार ४५

* शिवजीकी अर्धपरिक्रमा क्यों एवं कैसे लगाते हैं ? ५२

* शिवजीसे सम्बन्धित प्रमुख व्रत एवं उत्सव : प्रदोष व्रत, सोलह सोमवार व्रत, शिवप्रदक्षिणा व्रत, श्रावणी सोमवार, शिवामूठ (शिवमुष्टिव्रत), हरितालिका एवं महाशिवरात्रि ५३

* शिवमहिम्नस्तोत्र एवं शिवकवच ५८

* शिवजप : किसके लिए 'ॐ' लगाकर जप करना उचित ? ५९

* शिवमन्दिरकी विशेषताएं एवं शिवमन्दिरके सन्दर्भमें अनुभूति ६२

* शिवजीकी अवमानना रोकना, कालानुसार आवश्यक उपासना ६६

२. **शिवके असीम उपासक – हिन्दुओंके तेजस्वी राजा !** ६८

३. **शौव सम्प्रदाय : नाथ सम्प्रदाय एवं वीरशैव (लिंगायत)** ६८

卐 **शिवजीकी आरती एवं शिवचालीसा** ७४

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** ८०

देवोपासनाके अध्यात्मशास्त्रीय आधारसम्बन्धी ग्रन्थ !

शिवजीसम्बन्धी अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन

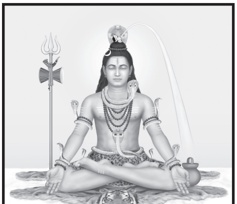

卐 शिवजीकी विशेषताएं क्या हैं ?

卐 शिवजीका तीसरा नेत्र किसका प्रतीक है ?

卐 शिवजीके विविध रूप कौनसे हैं ?

卐 ज्योतिर्लिंगका अर्थ एवं विशेषताएं क्या हैं ?

भूमिका

प्रत्येक देवताका विशिष्ट 'उपासनाशास्त्र' है, अर्थात प्रत्येक देवताकी उपासनाके अन्तर्गत किया जानेवाला प्रत्येक कृत्य विशिष्ट प्रकारसे करनेका एक धर्मशास्त्र है । यह शास्त्र समझकर किए उचित कृत्योंसे उपासकको उस देवताके तत्त्वका अधिकाधिक लाभ मिलनेमें सहायता होती है । इस दृष्टिकोणसे प्रस्तुत ग्रन्थमें शिवपूजनके पूर्व पूजक स्वयंको भस्म कैसे लगाए, शिवके सामने कौनसी रंगोली बनाए, शिवको कौनसे फूल कितनी संख्यामें चढाएं, उसे किस सुगन्धकी अगरबत्ती दिखाएं, किस सुगन्धका इत्र शिवजीको अर्पण करें आदि का विवेचन किया है ।

शिवजीकी दैनिक उपासना करनेवालोंके साथ ही सोलह सोमवार, श्रावणी सोमवार, शिवामूठ, हरितालिका, महाशिवरात्रि, जैसे व्रत एवं उत्सव करनेवाले शिवभक्तोंको भी इस ग्रन्थमें दिया उस सम्बन्धी विवेचन उपयुक्त सिद्ध होगा ।

यह ग्रन्थ पढकर शिवजीके उपासकोंकी भगवान शिवपर श्रद्धा दृढ हो एवं उन्हें अधिक साधना करनेकी प्रेरणा मिले, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

ईश्वरप्राप्ति हेतु उचित साधनासंबंधी मार्गदर्शक सनातनके ग्रंथ !

साधना (सामान्य विवेचन एवं महत्त्व)

- धर्माचरणको साधनाकी जोड देना आवश्यक क्यों ?
- सकामकी तुलनामें निष्काम साधना श्रेष्ठ कैसे ?
- स्वयं निर्धारित साधना उचित क्यों नहीं है ?

पढें सनातनका ग्रन्थ : **अपने स्वभावदोष कैसे ढूंढें ?**